छोटा भूगोल हस्तामलक

OR,

ABRIDGMENT OF BAUGOL HASTAMALK

(VOL.I.)

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब् लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार
राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने बनाया

BY

RÁJÁ ŚIVAPRASÁD, C.S.I.,
FELLOW OF THE UNIVERSITY OF CALCUTTA, AND LATE
INSPECTOR, 3RD CIRCLE, D. P. I.. N. W. P.

ग्रन्थ लाघव के लिये संकेत

उ० .. .. उत्तर	मी० मु० .. मील मुरब्बा
द० .. .. दक्षिण	बा० क० .. बायां कनारा
पू० .. .. पूर्व	द० क० .. दहनी कनारा
प० .. .. पश्चिम	रू० .. .. .. रुपया
वा० .. .. वायुकोन	उ० अ० .. उत्तर अक्षांश
ई० .. .. ईशान कोन	पू० दे० .. पूर्व देशान्तर
अ० .. .. अग्नि कोन	स० मु० .. सदर मुक़ाम
नै० .. .. नैर्ऋतकोन	० .. .. .. अंश
मी० .. .. .. मील	´ .. .. .. कला

लखनऊ—मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा
अप्रिल सन् १८८८ ई० ॥

t 1500 copies,
ice, per copy, 3 annas.

पहली बार १५०० पुस्तक
मोल फ़ी पुस्तक ≡) आने

गांव
शहर
बड़ा शहर
किला
नदी
झील
पहाड़
कच्ची सड़क
पक्की सड़क
देश सीमा
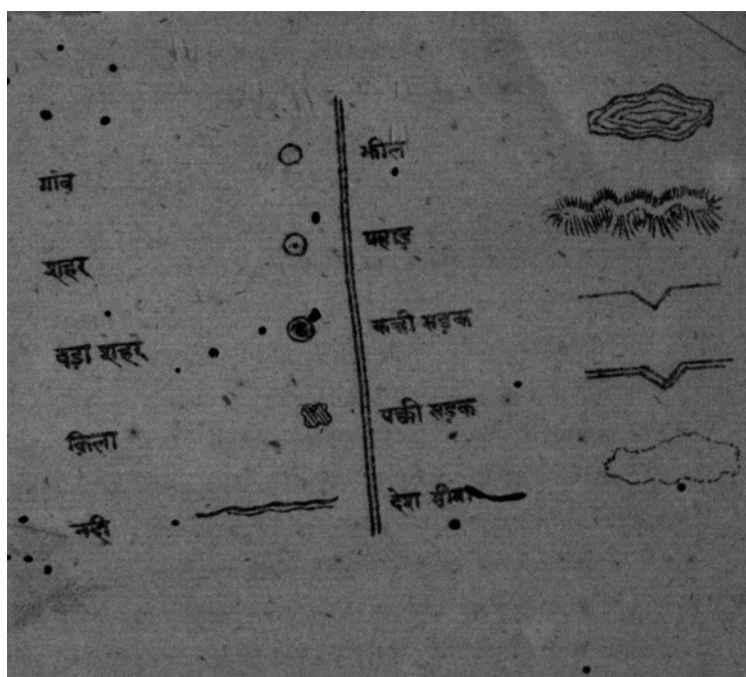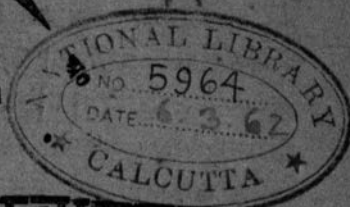
छोटाभूगोलहस्तामलक

जानना चाहिये कि यह भूगोल जो नारंगी सा गोल है और बिना किसी आधार के अधर में सूर्य्य के गिर्द घूमता है. दो तिहाई से अधिक पानी से ढंपा हुआ है। पहाड़ जो देखने में बहुत बड़े मालूम पड़ते हैं जब पृथ्वी के डील डौल पर ध्यान करो कि जिसका घेरा २५०२० मील का है तो ऐसे जान पड़ेंगे जैसे नारंगीके छिलके पर कहीं कहीं रवे अथवा दाने२ सेरहा करते हैं। यद्यपि हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में भी पृथ्वी को गोल ही बतलाया है, पर अब अंगरेज़ी जहाज़ों के समुद्र में चारों तरफ़ घूम आने से इस बात में कुछ भी संदेह बाक़ी न रहा, क्योंकि जब वह आदमी जो बराबर सीधा एक ही दिशा को मुंह किये चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे बिना दहने बायं मुड़े फिर उसी स्थान पर आजाता है

जहां से चला था, तो इस हालत में पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहर सकता, और सच है, जो पृथ्वी गोल न होती तो हिमालय पहाड़ के ऊंचेऊंचे शृङ्ग हिन्दुस्तान के सारे शहरों से क्यों न दिखलाई देते, अथवा उन शृङ्गों पर से दुर्बीन लगाकर, कि जिस से लाखों कोस के तारों की मूरतें दिखलाई देती हैं, शरद ऋतु के निर्म्मल आकाश में सारा हिन्दुस्तान क्यों न देख लेते, वरन समुद्र के तट पर खड़े होकर जो किसी आते हुए जहाज़ को देखने लगो तो पहले उसका मस्तूल अर्थात् ऊर्ध्वभाग और फिर पीछे से जब जहाज़ कुछ समीप आ जायगा तो पतवार अथवा अधोभाग दिखलाई देवेगा, क्योंकि जब तक जहाज़ समीप नहीं आता, पृथ्वी की गुलाई के कारण उसका अधोभाग जल की ओट में छिपा रहता है। यह पानी जिस से दो तिहाई पृथ्वी ढँकी हुई है, समुद्र अथवा सागर कहलाता है। यद्यपि समुद्र इस भूमण्डल पर एक ही है, पर जैसे हवेलियों का ठिकाना मिलने के लिये शहर को महल्लों में बांट देते हैं वैसे ही समुद्र में द्वीप और जहाज़ों का सहज से पता लग जाने के वास्ते उसके पांच हिस्से करके पांच नाम रख दिये हैं। पहले हिस्से को, जो अमेरिका के महाद्वीप से फ़रंगिस्तान और अफ़रीका के मुल्क तक फैला हुआ है अटलांटिक समुद्र कहते हैं, दूसरे हिस्से को जो अमेरिका महाद्वीप और एशिया के मुल्क के बीच में है, पासिफ़िक समुद्र बोलते हैं। तीसरा हिस्सा, जिसको हद्द अफ़रीका के मुल्क से लेकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के टापू तक है, उसका नाम हिन्द का समुद्र रक्खा गया है, और चौथा और पांचवां हिस्सा जो उत्तर और दक्षिण ध्रुव के गिर्द है, उत्तर समुद्र और

दक्षिण समुद्र कहलाता है। इन पिछले दो समुद्रों का जल शीत की अधिकाई से जमकर सदा यख़ अर्थात् पाला बना रहता है; जो ध्रुव के समीप है वह तो कभी नहीं गलता, और बाक़ी गर्मियों के मौसिम में जहां कहीं गलता है तो यख़ के टुकड़े पहाड़ों की तरह वहां जलमें तिरने लगते हैं। इन पांचों समुद्रों के जो छोटे छोटे टुकड़े दूर तक थल के भीतर आगये हैं, वे खाड़ी कहलाते हैं और खाड़ियों के नाम अकसर उन शहर अथवा मुल्कोंके नाम पर बोले जाते हैं जो उनके समीप अथवा कनारे पर होते हैं। बन्दर वह स्थान है जहां जहाज़ समुद्र की कोल में आकर लंगर डालते हैं। इस भूगोल का एक तिहाई जो जल से बाहर थल अर्थात् सूखा है कुछ एकही ठौर नहीं वरन कई जगह टुकड़ा टुकड़ा समुद्र के बीच बीच में प्रकट होरहा है। इन ज़मीन के टुकड़ों में जो टुकड़े बहुत बड़े हैं, और इसी वास्ते वे महाद्वीप कहलाते हैं, बाक़ी छोटे छोटे टुकड़े द्वीप अथवा टापू कहे जाते हैं। ज़मीन के हिस्से जो दूर तक समुद्र में निकल गये हैं, अर्थात् तीन तरफ़ उनके पानीहै, और एक तरफ़ महाद्वीप से मिले हुए हैं, उनको प्रायद्वीप बोलते हैं, और उसी प्रायद्वीप का सिरा, अर्थात् अग्रभाग, अन्तरीप है, और पिछला भाग जहां वह महाद्वीपसे मिलता है, जो तंग और छोटा हो तो डमरुमध्य कहा जायगा, क्योंकि जैसे डमरु का मध्य उसके एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है, उसी तरह यह भी ज़मीन के एक हिस्से को दूसरे से मिलाता है। यह भी जानना अवश्य है कि ज़मीन, अर्थात् थल, सभी जगह बराबर एकसी बट्टा ढाल मैदान नहीं है, किसी जगह बहुत ऊंची होगई है, ऊंची

विषुवत् रेखा को ३६० अंशोंमें, जिसे फ़ारसी में दर्जा कहते हैं, भाग करके प्रत्येक अंश से एक एक लकीर उ० और द० की तरफ़ खींच दी है, और फिर उन लकीरों को ३६० अंशों में भाग देकर हर एक अंश में पू० से प० को लकीरें खींच दी हैं * निदान इन लकीरों से तमाम भूगोल के नक़शे पर इस तरह के ख़ाने बन गये हैं कि जैसे चौपड़ और शतरंज में घर बने रहते हैं, और इन्हीं घरों अर्थात् लकीरों के अंशों की गिनती से भूगोल के सब स्थानों का पता लग जाता है, और एक जगह का दूसरी जगह से फ़ासिला भी मालूम होजाता है † जो लकीरें पू० से प० को खिंची हैं, उन्हें अक्षांस और उ० से द० को उन्हें देशान्तर कहते हैं। अक्षांस की गिनती विषुवत् रेखा से करते हैं, और देशान्तर उस लकीर से गिनते हैं, जो नक़शे में इंगलिस्तान के दर्मियान ग्रीनिच नगर पर से खींची गई है। जैसे चौपड़ और शतरंज में घर की गिनती बोलने से उस स्थान का अनुभव होता है, उसी तरह अक्षांस और देशांतर के अंश की गिनती

---

* छोटे नक़शों में जगह न मिलने के कारण अक्सर प्रत्येक अंश से एक एक लकीर न खींचकर दस दस अंशोंके बाद खींच देते हैं॥

† जब पृथ्वी का घेरा २५०२० का ठहरा और ३६० दर्जों में बांटा गया तो अवश्य एक एक दर्जा अर्थात् अंश ६९॥ मील का पड़ेगा जबकिसी जगह का किसी जगह से फ़ासला जानना मंज़ूर हो देख लो कि उन दोनों में कितने दर्जों का तफ़ावत है और फिर ६९॥ से गनके मील निकाल लो॥

कहने से नक़शे में उस जगह के गांव शहर इत्यादि का ज्ञान हो जाता है। गिनती अंशों की नक़शों में उन्हीं अंशों पर लिखी रहती है, और अंश के साठवें हिस्से को कला, और कला के साठवें हिस्से को बिकला कहते हैं। ध्रुव भूगोल में विषुवत् रेखा से उ० और द० उन दो स्थानों का नाम है, जहां देशांतर की सारी लकीरें इकट्ठी होकर आपस में मिल जाती हैं। भूगोल के नक़शे में सिवाय ऊपर लिखी हुई लकीरों के और भी चार लकीर के निशान बिन्दी बिन्दी देकर पूं से प० को बने रहते हैं, प्रयोजन उस से इस बात का बतलाना है, कि इन बिन्दियों के पहले दोनों लकीरें जो विषुवत् रेखा से २३॥ अंश के तफ़ावत पर उ० और द० की तरफ़ खिंची हैं उनके दर्मियान के मुल्क में सदा सूर्य्य के साम्हने रहने से गर्मी बहुत होती है, इसी वास्ते वह मुल्क गर्मसेर अथवा ग्रीष्म प्रधानक कहलाता है, और बाक़ी बिन्दी की दो लकीरें, जो दोनों ध्रुवों से २३॥ के फ़ासिले पर दोनों तरफ़ खिंची हुई हैं, उन के अंदर सर्दसेर मुल्क अथवा शीतप्रधानक देश हैं, क्योंकि उस पर सूर्य्य की किरन सदा तिरछी पड़ती हैं, इन सर्दसेर और गर्मसेर मुल्कों के दर्मियान मोतदिल अथवा अनुष्णाशीत मुल्क बसा है अर्थात् जो न बहुत गर्म है न सर्द। हम अभी ऊपर लिख आये हैं कि जिस तरह मकानों की तसवीरें बनती है, उसी तरह बुद्धिमानों ने भूगोल का भी नक़शा रचा है। भूगोल के नक़शों में, उन नक़शों का बिस्तार बहुत बढ़ जाने के भय से, शहर नदी पहाड़ सड़क झील इत्यादि की जगह नीचे लिखे हुए चिन्ह लिख देते हैं, उनका पूरा आकार नहीं बनाते। नक़शे में इन्हीं चिन्हों को देखकर उनका अनुभव

कर लेना चाहिये थल अर्थात् ज़मीन के उन दो बड़े टुकड़ों से, जो महाद्वीप कहलाते हैं, एक का नाम तो अमेरिका है, जिसे बहुधा नई दुनिया और नया महाद्वीप भी बोलते हैं, और दूसरे अथवा पुराने महाद्वीप के तीन खण्ड तीन नाम से पुकारे जाते हैं, । पू० का खण्ड एशिया, प० का यूरप अथवा फ़रंगिस्तान, और द० का अफ़रीका । इन सब में टापुओं समेत अटकल से प्रायः नव्वे करोड़ आदमी बसते हैं और उन की भाषा भिन्न २ प्रकार की कुछ न्यूनाधिक दो सहस्र होवेंगी। इन नव्वे करोड़ आदमियों में से प्रायः पच्चीस करोड़ तो ईसाई मज़हब रखते हैं, पैंतीस करोड़ बुध का मत मानते हैं, दस करोड़ मुसल्मान हैं, और दस करोड़ के लग भग हिन्दू होवेंगे, बाक़ी दस करोड़ में संसार के और सब मज़हब के आदमी सोच लेने चाहियें॥

एशिया

सीमा—उ० उत्तर समुद्र, द० हिन्द समुद्र, पू० पासफ़िक समुद्र और प० रेडसी नामक समुद्र की खाड़ी, स्वीज़ का डमरूमध्य, मेडीटरेनियन और ब्लाकसी नामक समुद्र के खाड़ियां, डन और बलगा नदियां, और यूराल पहाड़। अक्षांश उ० २ से लेकर ८० तक देशांतर पू० २६ से लेकर प० १७० तक। लम्बान पू० से प० अधिक से अधिक ७५०० मील और चौड़ान उ० से द० को ५००० मील। बिस्तार १७५०००० मी०मु०। आदमी उस में ५४२५५०००० बसते हैं, और आबादी उसकी इस हिसाब से फ़ी मी० मु० ३१ आदमी की पड़ती है भाषा उस में १४३ से अधिक बोली जाती हैं। पृथ्वी के इस भाग में ऐसे सर्द मुल्क से लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्म सेर तक बसे

हैं कि जिनमें आदमी सूर्य्यके तेजसे काले होजाते हैं। एशिया का मुल्क अगली तवारीख़ और इतिहासों में बड़ा प्रसिद्ध है, क्योंकि पहला आदमी जिससे हम सब मनुष्य उत्पन्नहुए पृथ्वी के इसी भागमें पैदा हुआ था, और इसी भागसे सारी बातें बुद्धि विवेक और सुख की निकलनी शुरू हुईं। पहले ही पहल पृथ्वी के इसी भाग में प्रतापी और बलवान् राजा हुए, और सब से पूर्व इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया; सिवाय इसके जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पड़े हैं, और जैसे फल फूल ओषधि अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इसमें पैदा होते हैं ऐसे कदापि दूसरे खंडों में नहीं मिलेंगे। एशिया में नीचे लिखी हुई विलायतें बसी हैं। आदी हिन्दुस्तान उसके पू० ब्रह्मा, उसके द० स्याम, उसके द० मलाका, स्याम के पू० कोचीन, ब्रह्मा के पू० और उ० चीन, उसके उ० एशियाई रूस, चीन के पू० जापान के टापू, हिन्दुस्तान के प० अफ़ग़ानिस्तान, उसके प० ईरान, चीनके प० तूरान, ईरान के प० अरब, उसके उ० एशियाई रूम॥

हिन्दुस्तान॥

एशिया के द० भाग में ८° से ३५° उ० अ० तक और ६८° से ९२° पू० दे० तक चला गया है। संस्कृतवाले इसे भारतवर्ष, और अंगरेज़ इंडिया कहते हैं। सीमा, द० समुद्र० उ० हिमालय पहाड़, प० सिंधु पार सुलेमान पर्वत, और पू० मनीपुर के जंगल पहाड़ोंसे परे ब्रह्मा का मुल्क। लम्बान कश्मीर से कन्याकुमारी अन्तरीप तक, जो सेतबंधरामेश्वर के भी अगाड़ी द० में है, प्राय: १८०० मील, और चौड़ान ब्रह्मा देशकी सीमा

से मुंज अन्तरीप तक, जो करांची बंदर से भी बढ़कर प० में है, और जिसे वहां वाले रास मुआरी भी कहते हैं, प्राय: १६०० मील । विस्तार कुछ न्यूनाधिक १२००००० मी० मु०, और आदमी अटकल से १४०००००००० बस्ते हैं । पड़ता फैलाने से फ़ी मील मु० कुछ ऊपर १५६ आदमी पड़ेंगे । हम अभी ऊपर एशिया की बड़ाई लिख आये हैं, पर जानना चाहिये कि एशिया में भी यह देश सब से अधिक प्रख्यात था और किसी समय में विद्या और धन के कारण सबका शिरोमणि गिना जाता था ॥

पहाड़ इस मुल्क में कम हैं और मैदान बहुत, और उन मैदानों में नदियां इस बहुतायत से बहती हैं, कि सारा मुल्क मानों बाग़ की तरह सिंच रहा है । हिमालय पर्वत, जो इस मुल्क की उ० सीमा है, दुनिया के सब पर्वतों से ऊँचा है । पू० में उस स्थान से जहां ब्रह्मपुत्र, प० में उस स्थान तक, जहां सिंधु नदी, इसे काटकर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आती है, इस पहाड़ की लम्बान प्राय: २००० मील, और चौड़ान अनुमान कुछ कम ४०० मील होवेगी । हिमाचल और हिमाद्रि भी उसी का नाम है । हिम संस्कृत में बर्फ़ को कहते हैं । इस पहाड़ के शृङ्ग सदा बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं । सबसे ऊंचा शृङ्ग धवलगिरि जहां से गंडक नदी निकली है, समुद्र के जल से कुछ ऊपर २८००० फुट ऊंचा है । जमनोत्री का पहाड़, जिसके नीचे से जमना निकली है, प्राय: २६००० फुट और पुरगिल पहाड़, जो पित्ती और सतलज नदी के बीच में है, प्राय: २४००० फुट ऊंचा है । नीतिघाटी, जिसे नीति भी कहते हैं, बदरीनाथ से ई० की तरफ़ दौली नदी के कनारे, कुछ ऊपर १६००० फुट समुद्र से बलंद है । कमाऊं, गढ़वाल

घाले इसी घाटी से हिमालय पार होकर तिब्बत और चीनको जाते हैं। हिमालय के पहाड़ों में प्राय: तेरह हज़ार फुटको उँचाई तक तो जंगल भी होता है, और आदमी भी बसते और खेतीबारी करते हैं, फिर १६००० फुटसे ऊपर बर्फ़ही बर्फ़ रहती है। जो पहाड़ १३००० फुटसे कम और ७०००से अधिक ऊंचे हैं, उन पर केवल जाड़े के दिनों में थोड़ी बहुत बर्फ़ गिर जाती है। जोराड साहिब पुरगिल पहाड़ पर २०००० फुट तक ऊंचे चढ़े थे, इससे अधिक ऊंचे इन पहाड़ों पर किसी आदमी का जाना अब तक सुनने में नहीं आया। हिमालय के सिवाय इस मुल्क में और भी जो सब पहाड़ बर्णन योग्य हैं, उनमें से बिंध्याचल इस देश के मध्य में पड़ा है, खंभात की खाड़ी से नर्मदा नदी के उत्तर २ ज़िले भागलपुर में गंगा के कनारे तक चला आया है, पर उँचाई उसकी अनुमान दो अढ़ाई हज़ार फुट से अधिक नहीं। सह्याद्रि बिंध्या के प० सिरे से लेकर समुद्र के तट से निकट ही निकट कुमारी अंतरीप तक चला गया है। पश्चिम घाट भी इसी को कहते हैं, और मलयागिरि इसी के द० भाग का नाम है। सह्याद्रि के साम्हने बंगाले की खाड़ी के निकट कावेरी नदी से बिंध्य के पूर्ब सिरे तक पहाड़ों की जो एक छोटी सी श्रेणी गई है उसे पूर्ब घाट बोलते हैं। इन पश्चिम और पूर्ब घाट के बीच में द० तरफ़ जो पहाड़ उसका नाम नीलगिरि है। यद्यपि इन पहाड़ों में पानी और जंगल की बहुतायतसे बड़े२ रम्य और मनोहर स्थान हैं, पर शृङ्ग उनके पांच छ: हज़ार फुट से अधिक ऊंचे कोई नहीं, केवल एक मूर्चु त्रिवेत नीलगिरि से कुछ ऊपर आठ हज़ार फुट ऊंचा है॥

नदियां जो इन पहाड़ों से निकलती हैं मुख्य उनमें गंगा जमना सरयू गंडक सोन कोसी तिष्टा चम्बल सिंध झेलम चनाव रावी व्यासा सतलज ब्रह्मपुत्र नर्मदा ताप्ती महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी हैं। गंगा इस देश की प्रधान नदी, जिसे संस्कृत में भागीरथी जाह्नवी इत्यादि बहुतेरे नामों से पुकारते हैं, हिमालय में गंगोत्रीसे निकलकर १५०० मील बहनेके बाद अनेक प्रवाहों से बंगाले की खाड़ी में गिरती है। राजमहलसे कुछ दूर बढ़कर इसकी कई धारा होगई, पर जो कलकत्ते के नीचे होकर भागीरथी और हुगलीके नाम से सागर के टापू के पास समुद्र से मिलती है, हिन्दू उसी को असली गंगा समझते हैं, और गंगासागर उसके संगम को बड़ा तीर्थ मानते है; और जो धारा सब से बड़ी पूर्व में ब्रह्मपुत्र के साथ मिल कर द० शहबाज़पुर नाम टापूके साम्हने समुद्र में गिरती है, उसे पद्मा, पद्मावती और पद्दा भी कहते हैं, इसका महात्म्य असली गंगा के बराबर नहीं मानते। इस सौ कोसके तफ़ावत में जो इन दोनों धारा के बीच पड़ा है, गंगा की और सब सैकड़ों धारा समुद्र से मिलती हैं। पानी की बहुतायत से इस जगह में बड़ा दलदल और अति सघन जंगल रहता है, उसी का नाम सुन्दरबन है। जमना, जिसका शुद्ध नाम यमुना है, और जिसे संस्कृतमें कालिन्दीनदी इत्यादि नामोंसे भी पुकारते हैं, गंगोत्री से कुछ दूर प० हिमालय में जमनोत्री के पहाड़ से निकलकर कुछ कम ८००मील बहतीहुई प्रयागके नीचे जिसे इलाहाबाद भी कहते हैं, गंगामें मिल जाती है। इनके संगम को हिंदू त्रिवेनी कहते हैं, और बहुतही बड़ा तीर्थ मानते हैं। सरयू, जिसे शरयू सरजू घर्घरा घाघरा देविका और देवा भी कहते

हैं, और गंडक अथवा गंडकी, और कोसी जिसका शुद्ध नाम कौशिकी है, और तिष्ठा, जिसे संस्कृत में तृष्णा और त्रिस्रोता भी कहते हैं, ये चारों नदी हिमालय से निकलकर पहीली छपरे से कुछ दूर ऊपर, दूसरी पटने के साम्हने, तीसरी भागलपुर से कुछ दूर आगे बढ़कर, और चौथी करतोया को लेता हुई नवाबगंज के पास गंगा से मिलती हैं। गंडक में सालग्राम निकलते हैं, इसलिये उसे सालग्रामी भी कहते हैं। गंडक में तैरना और करतोया में नहाना हिंदुओं के मत बमूजिब मना है, और इसी तरह कर्मनाशाके, जो एक छोटी सी नदी बनारस और बिहार के ज़िलों के बीच बहकर गंगा में गिरती है, पानी छूने के लिये मनाही है। चम्बल, जिसे संस्कृत में चर्मण्वती लिखा है, और सोन अथवा शोण, यह दोनों बिंध्याचल से निकल कर पहली तो इटावे से २४ मील नीचे जमना में गिरती है, और दूसरी शरयू और गंडक के मुहाने के बीच में छपरे के साम्हने द० से आकर गंगा में मिली है। सिंधु नदी जिसे अटक की दर्या और अंगरेज़ लोग इंडस कहते हैं, हिमालय के पार गारू शहर के पास कैलास पर्बत की उ० अलंग से निकली है, और १७०० मीलसे ऊपर बहकर कई धारा हो, कि जिन में सब से बड़ा का पाट मुहाने पर १२ मील से कम नहीं है, हिन्दुस्तान का प० दिशा में समुद्र से मिलती है। झेलम चनाब रावी व्यासा और सतलज ये पांचों नदियां हिमालय से निकलकर सब की सब इकट्ठी पंजनद के नाम से मिट्ठन कोट के नीचे सिंधु में गिरती हैं, और इन्हीं पांच नदियों से सिंचाहुआ देश पंजाब कहलाता है। इनमें से एक सतलज तो हिमालय के उ० भाग में मानसरोवर के पास

रावणहृद से निकली है, और बाकी चारों हिमालय की द० अलंग से निकलती हैं । झेलम, जिसे शास्त्रमें वितस्ता लिखा है, कुछ ऊपर ४०० मील बहकर झंगसे२० मील नीचे चनावसे मिलजाती है, और रावी भी, जिसका संस्कृत नाम ऐरावती है, कुछ ऊपर ४०० मील बहती हुई मुल्तानसे ४० मील ऊपर इसी चनाव से आमिलती है । व्यासा, जिसे विपाशा भी कहते हैं, अभयकुण्ड से निकल अनुमान २०० मील बहकर हरीके पत्तन के पास सतलज में मिलती है, और सतलज, जिसका शुद्ध नाम शतद्रु है, कुछ ऊपर ८०० मी० बहकर बहावलपुरसे ४० मी० नीचे चनाव से मिल,पञ्चनद के नामसे अनुमान ६० मी० बहकर, मिट्ठन कोट के नीचे, जैसा कि अभी ऊपर लिख आये हैं सिंधु में जा गिरता है। चनाव, जिसे संस्कृतमें चन्द्रभागा कहते हैं, हिमालय में अपने निकास से मिट्ठनकोट तक कुछ ऊपर ६०० मी० लंबी है । ब्रह्मपुत्र जिसे तिब्बत वाले साम्पू कहते हैं, मानसरोवर के पास हिमालय की उ० अलंग से निकलकर, कुछ ऊपर १६०० मील बहता हुआ समुद्र के पास आकर गंगा में मिल जाता है । नर्मदा शोण के उद्गमस्थान से पासही अमरकंटक से निकलकर, ७०० मील बहती हुई भडोंच के पास खंभात की खाड़ी में जागिरती है, और उसके मुहाने से कुछ दूर द० सूरत से २० मील नीचे तापी भी जो बैतूल के पास पहाड़ से निकली है, ४५० मील बहकर समुद्र में मिल गई है । महानदी नागपुर की अमलदारी से निकलकर ४०० मी० बहती हुई कटक के पास कई धारा होकर समुद्र में गिरी है । गोदावरी पश्चिमघाटमें त्रिम्बक से निकलकर वरदा और बानगंगा को, जो दोनों नदियां गोंदवाने की

इलाके से निकली हैं, लेती हुई ६०० मील बहकर राज महेंद्री के नीचे समुद्र से मिली है। कृष्णा भी उन्हीं पहाड़ों में सितारे के नज़दीक महाबलेश्वर से निकलकर मालप्रबं, गतपर्ब, सीमा, जिसे संस्कृत में भीमरथी लिखा है, तुंगभद्रा इत्यादि नदियों को जो उन्हीं पश्चिम घाट के पहाड़ों से निकली हैं लेती हुई ७०० मी० बहके मछली बंदर के पास समुद्र से मिल गई है, और कावेरी नालिगिरि में उतकमंद अथवा उटकमंड से निकल कर कुछ ऊपर ४०० मी० बहती हुई तिरुचिन्नापल्ली से थोड़ी दूर आगे समुद्र में खपगई है। निदान मुख्य नदियां तो यह हैं जिनका बर्णन हुआ, और बाक़ी छोटी छोटी तो इतनी हैं, कि जिनको गिनती बतलाना भी कठिन है, पर उन में से बहुत इन्हीं ऊपर लिखी हुई नदियों में मिल गई हैं। हिन्दुस्तान की नदियां बरसात में सब बढ़ती हैं, पर जो हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ से निकली हैं, वे बर्फ़ गलने के सबब गर्मी में भी कुछ थोड़ो बहुत बढ़ जाती हैं। नक़्शे में नदियों का बहाव देखने से देश का ऊंचा नीचा होना भी बख़ूबी मालूम हो जाता है। जहां से नदियां निकलती हैं, वहां अवश्य पहाड़ अथवा ऊंची धरती रहती है, और जिधर को वे बहती हैं वह उस्से नीची और ढाल होती है॥

नहर बड़ी इस मुल्क में दोही हैं, एक तो जमना की जो पहाड़से काटकर दिल्लीमें लायेहैं, और जिसका एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुँचकर रेगिस्तान में खप जाताहै, और दूसरी गंगा की जो हरद्वार से काटकर कानपुर तक दुआबे में लाये हैं॥

झील हिन्दुस्तान में बड़ी कोई नहीं और छोटी छोटी भी बहुत कम हैं। चिल्का कटक के पास, ३४ मी० लम्बी ८ मी० चौड़ा है, पानी खारा और उस्से नमक तैयार होताहै। पल्ला-काट अथवा पलियाकट, जिसे कोई प्रलयघाट भी कहता है, इतनी ही बड़ी, कर्नाटक अथवा कर्णाटक देश में है कोलेरु कृष्णा और गोदावरी के बीच में ४६ मी० लंबी १४मी० चौड़ा है। सांभर जयपुर और जोधपुर की अमल्दारी के बीच में, २० मी० लंबी और २ मी० चौड़ा है, सांभर नमक उसी में पैदा होता है। ऊलर, कश्मीर के इलाके में १६मी० लंबी और ८ मी० चौड़ी और गहरी इतनी कि अब तक किसी ने उसकी थाह नहीं पाई, वितस्ता एक तरफ़से उसका पानी लेती हुई बही है॥

हिन्दुस्तान के खण्ड तीन गिने जाते हैं जो हिमालय के पहाड़ों में हैं वह उत्तराखण्ड, जो नर्मदा और महानदी से दक्षिण है वह दाक्षिणात्य, अर्थात् दक्षिण देश अथवा दक्खिन, और इन दोनों के बीच आर्यावर्त्त है उसी को पुण्यभूमि कहते हैं। हिन्दुस्तान का दक्षिण भाग अन्तरीप है॥

मुसल्मान बादशाहों ने अपनी बादशाहत यहां २२ सूबों में बांटी थी परन्तु उन में से काबुल कंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं, और दक्षिण देश के कितने ही ज़िले उनके दख़ल में न रहने के कारण उन सूबे में गिने ही नहीं गये थे, सिवाय इसके उन सूबों की हद्दें अब ऐसी बदल गई हैं, कि कुछ तो एक के पास हैं, और कुछ दूसरे के हाथ चले गये, इसलिये उन सूबों का ख़याल छोड़कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी अमल्दारी में

भाग देकर उनके ज़िलों का उस क्रम से बयान करते हैं जो अब बर्ते जाते हैं॥

अंगरेज़ी अमल्दारी में तीन हाते हैं, बंगाल हाता मंदराज हाता और बम्बई हाता। बंगाल हाते में कर्मनाशा नदी तक के ज़िले तो बंगाले के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं और फिर जमना तक पश्चिमोत्तर देशाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर के ताबे, जमना के पार उ० में लाहौर वाले लेफ्टिनेंट गवर्नर का इख़्तियार है। और गंगा पार अवध के इलाक़े में वहां के चीफ़ कमिश्नर का इसी तरह बीच में नागपुर का चीफ़ कमिश्नर है और उसके दक्षिण बराड़ का॥

पहले उन ज़िलों का वर्णन होता है जो पश्चिमोत्तर देशाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में है।—१—इलाहाबाद, सद्र मुक़ाम इलाहाबाद जिसका असली नाम प्रयाग है २५° २८′ उ० अ० ८१° । ५७′ पू० दे० में गंगा और जमना के बीच जहां उन दोनों का संगम हुआ हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। यह बादशाही ज़माने में इसी नाम के सूबे की राजधानी था अब पश्चिमोत्तर देशाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। मकर की संक्रान्त का बड़ा भारी मेला होता है। क़िला बहुत मज़बूत है।—२—मिर्ज़ापुर इलाहाबाद के पू०, स० मु० मिर्ज़ापुर बड़े बेवपार की जगह गंगा के द० का० बसा है। ६ मील के तफ़ावत पर विंध्यबासिनी देवी का मन्दिर है और २६ मील पू० गंगा के तट एक छोटे से पहाड़ पर चनार का, जिसका शुद्ध नाम चरणाद्रि है, मज़बूत क़िला बना है। —३—बनारस मिर्ज़ापुर के पू० स० मु० बनारस, जिसे मुसल्मान मुहम्मदाबाद और हिन्दू काशी और बाराणसी भी

कहते हैं, ऐन गंगा के बा० क० बसा है। हिंदुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है, इस जगह मरना बहुत उत्तम समझते हैं, शहर बहुत आबाद है, धन, रूप, और संस्कृत विद्या का मानों घर है।—४—जौनपुर बनारस के उ०, स० मु० जौनपुर गोमती के बा० क० है, पुल पक्का बहुत मज़बूत और उमदा बना है।—५—आज़मगढ़, जौनपुर के ई० स० मु० आज़मगढ़ टोंस नदी के बा० क० है।—६—ग़ाज़ीपुर आज़मगढ़ के अ०, स० मु० ग़ाज़ीपुर गंगाके बा० क० है।—७—गोरखपुर आज़मगढ़ के उ०,उ० तरफ़ तराई का जंगल है,स० मु० गोरखपुर राप्ती नदी के बा० क० बसा है। ऊपर लिखे हुये छओं* ज़िले बनारस की कमिश्नरी में गिने जाते हैं।—८—बांदा इलाहाबाद के प०, स० मु० बांदा, क़िला पुराना कालिंजर का वहांसे ४८मील द०है। चित्रकूटका पहाड़ कामतानाथ जहांभरत रामचन्द्र के मनाने को आये थे ६६ मील अ०है।—९—फ़तहपुर, इलाहाबाद के बा० स० मु० फ़तहपुर। ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िले इलाहाबाद की कमिश्नरी में हैं।—१०—कान्हपुर, फ़तहपुर के बा०,स० मु० कान्हपुर गंगाके द० क० बड़ी छावनी की जगह है। ६ मील उ० प० झुकता हुआ गंगाके द०क० बिठूर हिंदुओं का तीर्थ है।—११—इटावा, कान्हपुर के प०, स० मु० इटावा जमना के बा० क० है।—१२—फ़र्रुख़ाबाद, इटावे के ई०, स० मु० फ़र्रुख़ाबाद गंगा से ३ मील हटकर द० क० बसा है। छावनी और क़िला फ़तहगढ़ का ऐन गंगा के कनारे है

---

* जौनपुर इलाहाबाद की कमिश्नरी में चला गया और पश्चिम का आधा हिस्सा गोरखपुर का बस्ती के नाम से जुदा एक ज़िला बन गया॥

क़न्नौज का पुराना शहर जिसे संस्कृत में कान्यकुब्ज कहते हैं फ़र्रुख़ाबाद से प्राय: ४० मील अ० गंगा के इसी कनारे उजड़ा सा पड़ा है।—१३—मैनपुरी, इटावे के उ०, स० मु० मैनपुरी।—१४—आगरा, मैनपुरी के प० बादशाही वक़्त में उसके आस पास के ज़िले उसी नाम के सूबे में दाखिल थे। अकबर बादशाह का यह दारुस्सल्तनत था इसी वास्ते अब तक अकबराबाद पुकारा जाता है। स० मु० आगरा जमना के द० क० बसा है शाहजहां बादशाह की बेगम मुमताज़ महल का मक़बरा जिसे लोग ताजगंज अथवा ताजबीबी का रोज़ा भी कहते हैं, इस शहर में निहायत उमदा बना है, दुनिया में इस साथ की दूसरी इमारत नहीं है। क़िला, और सिकंदरा जहां अकबर की क़बर है, और जमना पार एतिमादुद्दौला का मक़बरा भी देखने लाइक़ जगह है।—१५—मथुरा, आगरे के वा०, शास्त्र में इसी ज़िले का नाम सूरसेन लिखा है, स० मु० मथुरा जमना के द० क० कृष्ण का जन्म स्थान है। ५ मील उ० जमना के उसी कनारे वृन्दावन श्रीकृष्ण के रास बिलास की जगह है। ऊपर लिखे हुए पांचों ज़िले आगरे की कमिश्नरी में गिने जाते हैं।—१६—बदाऊं फ़र्रुख़ाबाद के वा० गंगापार। स० मु० बदाऊं।—१७—शाहजहांपुर, बदाऊं के पू० स० मु० शाहजहांपुर गर्रा नदी के बा० क० है। —१८—बरेली शाहजहांपुर के उ०, स० मु० बरेली से जुआ और संकरा नदियों के संगम पर है। बरेली से तीस मील ई० पीलीभीत है।—१९—मुरादाबाद, बरेली के वा० उ० भाग में जंगल और पहाड़ है। स० मु० मुरादाबाद रामगंगा के द० क० बसा है। वहां से मंज़िल एक पर द० नै० को झुकता संभल है। —२०—बिजनौर, मुरादाबाद के उ० स० मु० बिजनौर ये ऊपर

लिखे हुए पांचों ज़िले रुहेलखंड की कमिश्नरी में गिने जातेहैं। —२१—अलीगढ़, मुरादाबाद के नै० स० मु० कोयल। वहां से २ मील पर अलीगढ़ का क़िला है। —२२—बलंदशहर,अलीगढ़के ई०, स० मु० बलंदशहर काली नदी के द० क०।—२३—मेरठ बलंदशहर के उ०, स० मु० मेरठ बड़ी छावनी की जगह है। २४मी० पर ई० की तरफ़ गंगा के द० तटमे निकट जहां किसी समय में हस्तिनापुर बस्ता था अब केवल एक मंदिर दिखलाई देता है, और बाक़ी हर तरफ़ दीमकों की बांबियां हैं। मेरठ से मंज़िल एक पर बा० सरधना बसा है।—२४—मुज़फ़्फ़रनगर मेरठ के उ०, स० मु० मुज़फ़्फ़रनगर।—२५—सहारनपुर,मुज़फ़्फ़र-नगर के उ० स० मु० सहारनपुर जमना की नहर उसके बीचमेंगई है वहां से पू० अ० को झुकता गंगा की नहर पर रुरकी देखने लायक जगह है। ये पांचों ज़िले मेरठ की कमिश्नरी में हैं। —२६—देहरादून,सहारनपुर के उ० पहाड़ों के अन्दर साल के जंगल हैं। लंधौर और मंसूरी समुद्र से न्यूनाधिक ६००० फ़ुट ऊंचे साहिब लोगों के हवा खानेकी जगह इसी ज़िले में है, देहरा स० मु० है।—२७—कमाऊं गढ़वाल सहारनपुर से ई० को हिमालय के पहाड़ों में चीन की हद्द तक चला गया है। यह एक बेआईनी कमिश्नरी है। कमाऊं का असिस्टंट स० मु० अलमोरे में रहता है, और गढ़वाल का असिस्टंट अलमोरे से १०४ मील व अलखनंदा के बा० क० श्रीनगर के पास पावरी में रहता है। अलमोरे से २५मील पू० अ०को झुकती नयपाल की सहदपर लोहूघाटकी छावनी है। हिंदुओं का बड़ा तीर्थ बदरी-नाथ अलमोरेसे ८०मील उ० ज़रा बा०को झुकता विष्णुगंगा के द० क० समुद्र से १०२०० फ़ुट ऊंचा है बदरीनाथ से सीधा

२५ मील प० लेकिन सड़क की राह प्राय: १०० मील केदारनाथ का मन्दिर है, अलमोरे से २२ मील नै० द० का झुकता ७६०० फुट समुद्र से ऊंचा नैनीताल साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है।—२८—अजमेर रजपूताने के बीच अर्वली पहाड़ के पू० जयपुर जोधपुर किशनगढ़ और उदयपुर की अमल्-दारियों से घिरा हुआ। यह भी एक बेआईनी कमिश्नरी है* बादशाही ज़माने में इसके आस पास के सब इलाके इसी नाम के सूबे में गिने जाते थे। स० मु० अजमेर एक पहाड़ी की जड़ में बसा है वहां से १४ मील पर नसीराबाद की छावनी है। दूसरी तरफ़ ६ मील के फ़ासिले पर पुष्कर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है।—२९—सागर नर्मदा, अथवा जब्बलपुर की बे आईनी कमिश्नरी, † नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी से नर्मदा नदी के दोनों तरफ़ भूपाल और सेंधिया की अमल्दारी तक चली आई है। बिंध्यके टतस्थ होनेके कारण जंगल पहाड़ों से भरी है। स० मु० जब्बलपुर नर्मदा से कुछ दूर हटकर द० क० है साहिब कमिश्नर के नीचे कई डिपटी कमिश्नर मुक़र्रर हैं। आईनी ज़िले के मजिस्ट्रेट कलेक्टरों की तरह अपने अपने हिस्से के इलाकों की इन्तिज़ाम करते हैं। एक सागर में जब्बलपुर के वा० १०० मील पर रहते हैं। दूसरे सिउनी में जब्बलपुर के द० नै० का झुकता १०० मील पर तीसरे बैतूल में जब्बलपुर के नै० ०० मील पर। चौथे नरसिंहपुर में जब्बलपुर के प० नै० का झुकता ८० मील पर

* अब यह पश्चिमोत्तर देशाधिपतिके तहत से निकल कर अलग चीफ़ कमिश्नरी होगई॥

† अब यह नागपुर की चीफ़ कमिश्नरी में शामिल है॥

पांचवें होशंगाबाद में जब्बलपुर के प० नै० को ज़रा झुकता १५० मील पर नर्मदा के बा० क०। छठे मंडले में जब्बलपुर के द० ५६ मील पर। सातवें डमोह में जब्बलपुर के बा० उ० को झुकता ६० मील पर —:०— झांसी को वे आठवीं कमिश्नरी कान्हपुर के प० जमना पार। इसमें चार ज़िले हैं पहले का स० मु० हमीरपुर * बेत्वा के बा०क० जहां वह जमना से मिली है। दूसरेका जालौन हमीरपुर के बा० † तीसरे का झांसी जालौन के नै०और चौथेका चंदेरी ‡ झांसीके द०नै०को झुकता॥

बंगाले के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में जो ज़िलेहैं उन में —१—चौबीस परगना, भागीरथी के प० और सुन्दरबन के उ०, स० मु० कलकत्ता २२°२३` उ० अ० और ८८°२८` पू० दे० में, समुद्र से ५० फुट ऊंचा, और प्रायः १०० मील दूर ६मील लंबा भागीरथी के, जिसे वहां दर्याय हुगली कहते हैं, बा० क०बसा है। अब यही हिंदुस्तान की राजधानी है। —२— हवड़ा, चौबीस परगने के प० स० मु० हवड़ा कलकत्ते के ठीक साम्हने गंगा पार बसा है।—३—बारासत, चौबीस परगने के उ०, स० मु० बारासत। —४—नदिया, बारासतके उ०, स० मु० किशन-नगर। शहर नदिया अथवा नवद्वीप गंगा के किनारे, जहां उसकी दोनों धारा जलंधी और भागीरथी का संगम हुआ है, बर्दवान के ज़िले में है। इसी ज़िले में बा० की तरफ़ भागीरथी के किनारे मुर्शिदाबाद के द० ३० मी० पलासी का गांवहै,

* यह ज़िला अब इलाहाबाद की कमिश्नरीमें शामिल होगया है॥

† झांसी का शहर और ज़िला संधियाको मिलगया है॥

‡ अब यह ललितपुर का ज़िला कहलाता है॥

जहां लार्ड क्लाइव ने सन् १७५७ ई० में सिराजुद्दौला को शिकस्त दी थी।—७—जसर, नदिया के पू०। सुन्दरबन इस ज़िले के द० भाग में पड़ा है। स० मु० जसर अथवा मुरली।—६—बाक़रगंज, जसर के पू० स० मु० बेरीसाल गंगा के एक टापू में बसा है।—८—नावकोली, बाक़रगंज के पू० स० मु० बलुआ मेघना के बा० क० है।—८—फ़रीदपुर अथवा ढाका जलालपुर बाक़रगंज के उ० स० मु० फ़रीदपुर। वहांसे ५मीलपर पद्मा, बहती है।—६—ढाका ढाका जलालपुर,के पू० स० मु० ढाका, जिसे जहांगीर नगर भी कहते हैं। बूढ़ी गंगा के बा० क० किसी ज़माने में सूबे बंगाले की राजधानी था।—१०—त्रिपुरा ढाका और इस ज़िले के बीचमें ब्रह्मपुत्र का दर्या,जिसे वहां मेघना के नाम से पुकारते हैं, बहता है इस ज़िलेका नाम पुराने क़ाग़ज़ों में रोशना बाद भी लिखाहै। यह पू० दिशामें हिन्दुस्तान का सबसे परला ज़िलाहै इससे आगे जंगल पहाड़हैं कि जिन मे परे फिर वहां का मुल्क बसता है। स० मु०कोमेला पहाड़ के पास गोमती नदी के बा० क० है।—११—चित्रग्राम अथवा चटगांव, जिसे अंग्रेज़ चिटागांग कहते हैं त्रिपुरा के द० नाफ़ नदी तक चलागया है। यह भी ज़िला हिन्दुस्तान की हद्द पर है। हाथी जंगली त्रिपुरा और चटगांव दोनों में बहुत हैं। चटगांव अथवा इसलामा बाद, कर्नफूली नदीके द० क० स० मु० है,उससे २० मील उ० हिंदुओंकातीर्थ सीताकुंड है, जल उसका सदा गर्म और जलती हुई बत्ती पास लेजाओ तो उसकी बाफ़ बारूद सी भभक जाती है उसी थाने के इलाक़े में बलेवा कुंड के पानी पर ज्वालामुखी की तरह सदा आग बला करती है।—१२—सिलहट, जिसका

शुद्ध नाम श्रीहट्ट है, त्रिपुरा के उ० । शास्त्र में जो मत्स्य देश लिखाहै वह उसीके आस पासहै स० मु० सिलहटसे २० मील ई० उ० को भुकता जयंतीपुर पहले एक राजा के दखल में था पर वह राजा अपने देवता को आदमियों का बल चढ़ाता था इसी इल्लत में जब्त होगया।—१३—कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पू० तीन तरफ़ पहाड़ों से घिरा और दलदलझील और जंगल से भरा, स० मु० सिलचार बारक नदीके बा० क० है।—१४—मैमनसिंह सिलहट के प० स० मु० सोवारा अथवा नसीराबाद ब्रह्मपुत्र के द० क०।—१५—पबना जसर के उ० स० मु० पबना।—१६—राजशाही, पबना के बा० स० मु० बोलिया गंगा के बा० क०।—१७—बगुड़ा राजशाही के ई० स० मु० बगुड़ा।—१८—रंगपुर बगुड़ा के उ० जंगल में हाथी गेंड़े बहुत मिलते हैं। स०मु० रंगपुर। —१९— दिनाजपुर रंगपुर के प० स० मु० दिनाजपुर पूर्ण बाबा नदी के द० क०। —२०—पुरनिया, दिनाजपुर के प० मोरंग का पहाड़ और जंगल इस ज़िले के उ० पड़ता,है उसी को संस्कृत में किरात देश लिखा है स० मु० पुरनिया।—२१—मालदह पुरनिया के द० स० मु० मालदह महानन्द नदी के बा० क० बस्ता है मालदह से १०मी० द० गौड़का शहर किसी समय में गंगा कनारे बंगाले की राजधानी था। अब गंगा भी वहांसे आठ नौ मी० हटगई और शहर का भी केवल निशानही रहगया हुमायूं बादशाह ने उसका नाम जन्नताबाद रक्खा था, पुराना नाम लक्ष्मणावती है।—२२—मुर्शिदाबाद मालदह के द० स० मु० मुर्शिदाबाद भागीरथी के बा० क० बसा है। पहले उसका नाम मक़सूदाबाद था सूबे बंगाले को जो बिहार से बह्मांतक

चला गया है राजधानी था।—२३–बीरभूम, मुर्शिदाबाद के प० स० मु० सिउडी वहां से ६० मील बा०। झाड़खंड के बीच देवगढ़ में बैद्यनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है और १५ मील प० नागौर का पुराना शहर वीरान पड़ा है उससे ९ मील पर बक्लेसर में गर्म पानी का एक सोता है।—२४—बर्दवान (वर्द्धवान); बीरभूम के द०, स० मु० बर्दवान।—२५—हुगली बर्दवान के अ०, स० मु० हुगली भागीरथी के द० क०।—२६–मेदनीपुर, हुगली और हवड़ा के नै०, स० मु० मेदनीपुर।—२०–बलेश्वर, जिसे बालासोर भी कहते हैं, मेदनीपुर के द०, स० मु० बलेश्वर बूढ़ीबलंग के द०, क० समुद्र से ८ मील पर बसा है।—२८—कटक, बलेश्वर के द०, संस्कृत में उसे उत्कल देश कहते हैं। बादशाही वक्त में अपने आस पास के ज़िलों समेत बंगाले की हद्द तक सूबे उड़ेसा लिखा जाता था, स० मु० कटक महानदी की दो धारा के बीच में बसा है।—२६–खुरदा अथवा पुरी, कटक के द० चिलका झील तक, स० मु० पुरुषोत्तमपुरी अथवा जगन्नाथ हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ समुद्र के कनारे है।–३०–बांकुड़ा, बर्दवान के प०, स० मु० बांकुड़ा।–३१–भागलपुर, मुर्शिदाबाद के बा० विंध्य के पहाड़ पू० में इसी ज़िले तक हैं, फिर दक्षिण को मुड़जाते हैं। स० मु० भागलपुर गंगा के द० क०, २ मील के फ़ासिले पर बसा है वहां से ६० मील पू० अ० को ज़रा झुकता गंगा के उसी कनारे राजमहल है। भागलपुर से २ मंज़िल द० जंगल में आध कोस ऊंचे मंदरगिर पर्वत पर हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ है। —३२—मुंगेर, भागलपुर के प०, स० मु० मुंगेर, जिसका असली नाम मुद्गिर बतलाते हैं, गंगा के द० क० सूबे बंगाले की सर-

हद्द पर बसा है। मुंगेरसे ५ मील पू० सीताकुण्डका गर्म सोता है।-३३-बिहार, मुंगेर के प०, द० भाग में पहाड़ है। स० मु० गया फल्गु नदी के बा० क० हिन्दुओं बड़ा तीर्थ है। बिहार गया से ४० मील ई० है, मुसल्मान बादशाहोंके वक्त में इसी शहर के नाम से यह सूबा, जो सूबे इलाहाबाद और बंगाले के बीच में पड़ा है, पुकारा जाता था। संस्कृतमें उसके द० भाग को मगध और उ० भाग को मिथिला लिखा है। किसी ज़माने में इसके आस पास बौध लोगोंके बड़े तीर्थथे। बिहार से १६ मील द राजग्रह जरासिंध की पुरानी राजधानी है। राजग्रह से १५मील कुण्डलपुर रुक्मिनी का जन्मस्थान है। —३४—पटना अथवा अज़ीमाबाद, बिहार के प० बा० को झुकता, स० मु० पटना गंगा के द० क०, किसी समयमें मगध देश बरन सारे हिन्दुस्तान की राजधानी, और पाटलीपुत्र पद्मावती और कुसुमपुर के नाम से पुकारा जाता था। पटने से १० मील प० गंगा के द० क० दानापुर की छावनी है।—३५—तिरहुत अथवा तिरहुत, जिसे बाजे आदमी त्रिभुक्ति भी कहतेहैं, भागलपुर और मुंगेर के बा० उ० में तराई का जंगल है। गंडक और कोसी नदी के बीच जो देश है उसे संस्कृत में मिथिला और वैदेह कहते हैं, उसी का यह मानों मध्य भाग है, स० मु० मुज़फ़रपुर।—३६—शाहाबाद, पटने के प० शोण से लेकर कर्मनाशा नदी तक, जो सूबे बिहार की हद्द है स० मु० आरा। वहां से २ मंज़िल पू० गंगा के द० क० बकसर का क़िला है और अनुमान ७५ मील द० नै० को झुकता प्रायः १००० फुट ऊंचे पहाड़ पर शोण के बा० क० रुहतासका क़िला ऊजड़ पड़ा है।—३७—शरन जिसका शुद्धोच्चारण शरण है शाहाबाद के

उ०, स० मु० छपरा। वहां से दो मंज़िल पू० गंडक के बा० क० जहां गंगा के साथ उसका संगम हुआ है हाजीपुर में हर साल कार्त्तिकी पूर्णिमा को मेला हुआ करता है।—३८—चम्पारन सारन के द०, स० मु० मोतीहाड़ी पासही सुगौली की छावनी है।—३६—आशाम, सिलहट के उ०, ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ़ हिमालय में चीनकी सर्हद्द तक चला गयाहै। आशाम आईनी ज़िलों में नहीं गिना जाता, इसके लिये एक जुदा कमिश्नर और अजंट मुक़र्रर है, और उसके नीचे ६ बड़े असिस्टंट ६ जगहों में कचहरियां करते हैं। पहला ब्रह्मपुत्रके बा० क० स० मु० गोहाट में। दूसरा गोहाट से ७५ मील पू० ई० को भुकता नौगांव में। तीसरा गोहाट से ६५ मील ई० ब्रह्मपुत्र के द० क० तेजपुर में। चौथा गोहाट से ८० मील प० ब्रह्मपुत्र के बा० क० ग्वालपाड़े में। पांचवां गोहाट से १६० मील ई० लखमपुरमें। और छठा गोहाटसे १८०मील ई० पू०को भुकता शिवपुर अथवा शिवसागर में। गोहाटसे ६५ मील द० खसियों के पहाड़ में, जिसे अंगरेज़ कोसिया कहते हैं समुद्र से ४५०० से फुट ऊंची चेरापूंजी साहिब लोगोंके हवा खानेको जगहहै। अजंटो के तहत में २० राजा और सुर्दार गिने जाते हैं, पर हम तो राजा और सर्दार के बदल उनको बनरखा कहेंगे, क्योंकि बन और भाड़ी यही उनकी मिल्कियत है। जंगल पहाड़ बहुत हैं, विशेष करके पू० और उ० में, और उनकेबीच बहुतेरी जाति के जंगलीमनुष्य बसते हैं। आशामका प० भाग अब तक भी कामरूप पुकारा जाता है पर शास्त्र के बमूजिब रंगपुर, मैमनसिंह, सिलहट, जयंता, कचार, मनीपुर और आशाम, ये सब कामरूप ही ठहरते हैं संस्कृत में इसे प्राग्-

ज्योतिष भी कहते हैं। ६२° ४६' पू० दे० और २६° ३६' उ० अ० में कामाक्षा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है।—४०—नैऋ त कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी और छोटे नागपुर की कमिश्नरी बांकुड़ा के प०, यह एक बहुत बड़ा इलाक़ा है साहिब कमिश्नर के नीचे कई असिस्टंट रहते हैं, वही उसमें जगह जगह पर आईनी ज़िले के मेजिस्ट्रेटकलेक्टरों की तरह कचहरियां करते हैं। साहिब कमिश्नर विलकिंसनपुर अथवा छोटे नागपुर मैं रहतेहैं छावनी कोस भर पर डोरंडा में है, हद्द इस इलाक़े की उ० को बीरभूम बिहार और मिरज़ापुर के ज़िलों से मिलता है, और द०को गंजाम तक, जो मंदराजहाते का ज़िलाहै, चलीगई। पू० उसके बाजगुजार महालमेदनीपुर और बर्दवान है, और प० बघेलखंड का राज सागर नर्मदा और नागपुर का इलाक़ा है, इस इलाक़ेमें आबादी कम है और जंगल झाड़ी बहुत। पहाड़ों में गोंद चुआड़ कोल धांगड़ इत्यादि कई जाति के जंगली मनुष्य रहते हैं। इस में जो मुल्क सर्कारी बन्दोबस्त में कमिश्नरी से संबंध रखता है उसे छोटा(अथवा चोटिया)नागपुर मानभूम और हज़ारी बाग ३हिस्सों में बांटकर ३ असिस्टंटोंके ताबे कर दियाहै,पहले का० स० मु० लुहारडग्गा छोटे नागपुर से ४५ मील पू० दूसरे का पुरुलिया ७० मील पू० तीसरे का हज़ारीबाग़ ५० मील उ०। हज़ारी बाग़ के पास कई सोते गर्म पानी के हैं। हज़ारी बाग़ से अनुमान दो मंज़िल पू० सुमेर शिखर का पहाड़ जैनियों का बड़ा तीर्थ है अंगरेज़ उसे पार्श्वनाथ का पहाड़ कहते हैं अकसर वहां हवा खानेको जाते हैं। अजंटी के आधीन नाम को तो २८ राजा हैं पर इख़्तियार उनके बहुत थोड़े।—४१—

बाजगुज़ार महाल नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पू० और कटक और बलेश्वर के प० जंगल भाड़ी बहुत, राजा इन महालोंके केवल नाम मात्र हैं, इख़्तियार सब साहिब सुपरिंटेंडंट का है, खंडलोग वहां अब तक आदमी का बल देतेहैं।–४२–नागपुर*नैर्ऋतकोनकी सीमा और संभलपुर की अजंटी के प०। यह बड़ाइलाक़ा नै० की तरफ़ हैदराबाद की अमल्दारी से जा मिला है। इस इलाक़े में कुछ हिस्सा सूबे गोंदवाने का बाक़ी सूबे बराड़ है इस बे आईनी ज़िले में भी आशाम और छोटे नागपुर की तरह एक कमिश्नर रहता है और उसके तहत में ५ डिपटी कमिश्नर आईनी ज़िले के कलक्टरों की तरह पांच ज़िलों में काम करतेहैं। पहला स० मु० नागपुर में। दूसरा नागपुर से ७० मील पू० रायपुर में। तीसरा ४० मील पू० बानगंगा के द० क० भंडारा में। चौथा ८० मील उ० चिंदवारा में। पांचवां १०५ मील द० ज़रा ऋ० को झुकता बरदा नदी के बा० क० से ५ मीलके तफ़ावतपर चांदामें॥

अब वे सब ज़िले लिखे जाते हैं जो पंजाब के लेफ़्टिनेंट गवर्नर के ताबे हैं।–१–दिल्ली, बलंद शहरके बा०, बादशाही ज़माने में इस नाम का एक सूबा गिना जाता था कि जिस की हद्द सूबे लाहौर से मिलती थी। स० मु० दिल्ली, जिसे बहुधा शाहजहानाबाद कहते हैं जमना के द० क० है। युधिष्ठिर महाराजने इस जगह इंद्रप्रस्थ बसाया था और तब से वह स्थान बराबर हिन्दुस्तान की राजधानी रहा पर कई

---

* अब यह जब्बलपुर की बे आईनी कमिश्नर के साथ मिलके एक जुदा चीफ़ कमिश्नरी होगया॥

दफ़ा बसा और कई दफ़ा उजड़ा, अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां का बसाया है नहर जमना की गली गली घूमी है। शहर पनाह संगीन क़िला लाल पत्थर का बहुत ख़ूबसूरत बना है, और भी बहुतसी इमारतें देखने के लाइक़ हैं।—२—गुड़गांवा दिल्ली के नै०, स० मु० गुड़गांवा। —३—झझर गुड़गांवे के उ०, स० मु० झझर। —४—रोहतक गुड़गांवे के उ०, स० मु० रोहतक।—५—हिसार, अथवा हरियाना रोह तक के बा० प० को झुकता, स० मु० हिसार। —६—सिरसा हिसार के बा० स० मु० सिरसा।—७—पानीपत, दिल्ली के उ०, स० मु० करनाल जमना की नहर के पास। —८—थानेसर, पानीपतके उ०, स० मु० थानेसर, जिसे संस्कृतमें स्थाणुतीर्थ और कुरुक्षेत्र कहतेहैं सरस्वतीके बा० क० हिंदुओंका बड़ा तीर्थ है।—९—अम्बला, थानेसरके उ०, स० मु० अम्बाला। —१०—लुधियाना, अम्बाले के बा०, स० मु० लुधियाना। सतलज की एक धारा के बा० क० पर बसा है।—११— फ़ीरोज़पुर लुधियानेके प०, स० मु० फ़ीरोज़पुर सतलजके बा० क०। इन ऊपर लिखे हुए चारों ज़िलों में दरख़त बहुत कम हैं, कोसों तक सिवाय आक झाड़बेरी के और कुछ भी दिखलाई नहीं देता। फ़ीरोज़पुर की गर्द मशहूर है।—१२— शिमला, हिमालय के पहाड़ों में अम्बाले से ६० मील उ० पू० को झुकता स० मु० शिमला समुद्र से ७२०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। शिमला से ३०मील इधर सबाटू की छावनीहै, और सबाटूसे बारहबारह तेरह तेरह मील इधर पास ही पास कसौली और डगसाई की छावनियां हैं। —१३—जालंधर, लुधियाने के उ० बा० को झुकता सतलज पार

स० मु० जालंधर।—१४—हुशयारपुर, जालंधर के पू० स० मु० हुशयारपुर।—१५—कांगड़ा हुशयारपुर के ई० यह ज़िला बिलकुल हिमालय के पहाड़ों में बसा है। स० मु० कांगड़ा, जिसे नगरकोट भी कहते हैं, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। वहां से दो मंज़िल बा० की तरफ़ नूरपुर बसा है, और ७० मील ई० पू० को झुकता मणिकर्ण का तप्तकुण्ड है। कांगड़े से अनुमान ६० मील इधर व्यास नदी के ७ मील पार ज्वालामुखी हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, पहाड़ में से आग निकलती है उसी की पूजा करते हैं।—१६—अमृतसर जलंधर के प० बा० को झुकता व्यास नदी पार, स० मु० अमृतसर सिखों का तीर्थ बड़े व्योपार की जगह है।—१७—बटाला अमृतसर के ई०, स० मु० गुरुदासपुर।—१८—लाहोर, अमृतसरके प०नै० को झुकता। बादशाही ज़माने में यही नाम इस सारे सूबे का था। स० मु० लाहोर अथवा लहावर कलकत्ते से ९१०० मील और सड़क की राह १३५२ मील रावी के बा० क० ३१° ३६′ उ० अ० ७४° ३′ पू० दे० में बसा है पंजाब के लेफ़्टिनेंट गवर्नर इसी जगह रहते हैं।—१९—शेखूपुरा लाहोर के प० रावी पार स० मु० गुजरांवाला।—२०—सिआलकोट शेखूपुरे के उ०, स० मु० सियालकोट चनाब के बा० क० ५मील के तफ़ावत पर है।—२१—गुजरात सियालकोटके प० चनाब पार। स० मु० गुजरात चनाब के द० क० ५ मील के तफ़ावत पर है।—२२—शाहपुर गुजरात के नै०, स० मु० शाहपुर झेलम के बा० क० है।—२३—पिंडदादनख़ां गुजरात के प०, स० मु० झेलम, झेलम नदी के द० क० है। मंज़िल एक पर पहाड़ में सेंधे नमक की खान है—२४—रावलपिंडी पिंडदादनख़ां के उ०, स० मु०

रावलपिंडी । वहां से ६० मील प० बा० को झुकता सिंधु के बा० क० अटक का मशहूर क़िला है, कोई इसे अटक बनारस भी कहते हैं ।–२५–पाकपट्टन लाहोर के द० नै० को झुकता सतलज और रावी के बीच में है स० मु० फ़तहपुर गूगेरा रावी के बा० क०,पाकपट्टन वहां से ४५मील द० अ० का झुकता सतलज के द० क० ६ मील के तफ़ावत पर है ।–२६–मुलतान, पाकपट्टन के प० । इसके द० और पू० भाग में रेगिस्तान है । बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबे की राजधानी था जिसकी हद्द ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाती थी । स० मु० मुलतान चनाब के बा० क० से ४ मील पर बसा है ।–२७– झंग मुलतान के बा०, स० मु० झंग अथवा झंग सियाल चनाब के बा० क० है ।–२८–खानगढ़ मुलतान के द० बा० को झुकता । स० मु० खानगढ़ । –२९–लइयां खानगढ़ के उ०, स० मु० लइया सिंधु के बा० क० से १० मील पर बसा है । शास्त्र में इस ज़िले का नाम सिंधु सौबीर लिखा है ।–३०–देरा ग़ाज़ीख़ां खानगढ़ के नै० सिंधु पार । स० मु० देराग़ाज़ीख़ां सिंधु के द० क० है । –३१– देराइस्माईलख़ां देराग़ाज़ीख़ां के उ० । स० मु० देराइस्माईलख़ां सिंधु के द० क० है । इस ज़िलेमें पिशोर के ७४मील इधर सिंधु के कनारे सेंधे नमक का पहाड़ है ।–३२–हज़ारा, रावलपिंडी के बा० पहाड़ों के अन्दर । स० मु० हज़ारा ।–३३–पिशोर हज़ारे के प० सिंधु पार । यह इस तरफ़ हिंदुस्तान का सबसे परला ज़िला है इससे आगे ख़ैबर के घाटे के पार जो शहर से १५ मील है अफ़ग़ानिस्तान का मुल्क शुरू होता है। स० मु० पिशोर अथवा पिशावर सिंधु पार ४४मील के तफ़ावत पर बड़ी छावनीकी जगह है ।

वहां से ८ मील पर काबुल की नदी बहती है।—३४—कोहाट पिशौर के द०, स० मु० कोहाट॥

नीचे वे ज़िले लिखे जाते हैं जो अवध के चीफ़ कमिश्नर के ताबे हैं, शास्त्र में इसे उ० कोशल कहा है और बादशाही दफ़्र में सूबे अवध लिखा जाता था।—१—उन्नाव, कान्हपुर के पू० गंगापार। स० मु० उन्नाव।—२—लखनऊ उन्नाव के ई०, स० मु० लखनऊ, जिसका असलीनाम लक्ष्मणावती बतलाते हैं कलकते से ६१६मील बा० २८° ५१ ´उ० अ० और ८०°५० पू० दे० में गोमती के द० क० बसा है। साहिब चीफ़ कमिश्नर के रहने का मुक़ाम है।—३—रायबरेली, लखनऊ के द०। स० मु० रायबरेली सई नदी के बा० क०।—४—सुलतांपुर रायबरेली के पू०। स० मु० सुलतांपुर गोमती के बा० क०। —५—सलोन रायबरेली के द० अ० को झुकता, स० मु० सलोन। —६—फ़ैज़ाबाद, सुलतांपुर के उ०। स० मु० फ़ैज़ाबाद, पास ही सरयू के द० क०, अयोध्या का पुराना शहर रामचंद्र का जन्मस्थान हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है।—७—गोंडा, फ़ैज़ाबाद के बा० उ० को झुकता। स० मु० गोंडा।—८—बहराइच गोंडेके बा०। स०मु० बहराइच। वहां सुलतान मसऊदग़ाज़ी और रजब सालार का मक़बरा है।—९—मुल्लापुर, बहराइच के बा० घाघरा के द० क०। स० मु० मुल्लापुर।—१०—सीतापुर, मुल्लापुर के प०। स०मु० सीतापुर।—११—दर्याबाद, सीतापुर के बा०। स०मु० दर्याबाद।—१२—मुहम्मदी दर्याबादके उ०। स०मु०मुहम्मदी *॥

* सुनते हैं कि मुल्लापुर दर्याबाद मुहम्मदी और सलोन टूट गये और उनकी जगह पर हरदोई नवाबगंज लखीमपुर और परतापगढ़ ज़िले मुक़र्रर हुए॥

अब वे ज़िले लिखे जाते हैं जो मंदराज की गवर्नरी के ताबे हैं —१–गंजाम, कटक के द०, चिलकिया झील से सिकाकोल नदी तक, स० मु० गंजाम उसी नाम की नदी के ऊपर समुद्र के तट पर बसा है।–२—विजिगापट्टन, गंजामके नै०। स० मु० विजिगापट्टन जिसे विशाखपट्टन भी कहते हैं, समुद्र के तट पर है।—३—राजमहेंद्री विजिगापट्टन के नै०। स० मु० राजमहेंद्रवरं समुद्र से ५० मील गोदावरी के बा० क०है। इन ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िलों के प० भाग में जंगल पहाड़ बहुत हैं।—४–मछलीबंदर, (मैसलीपट्टन), राजमहेंद्री के द० नै० को झुकता। इन दोनों ज़िलों का नाम शास्त्रमें कलिंग देश लिखा है, स० मु० मछलीबंदर समुद्र के तट पर है। –५–गंतूर मछलीबंदर के नै०। स० मु० गंतूर (मुर्तज़ानगर)। —६–नेल्लूरु, गंतूर के द०, स० मु० नेल्लूरु पन्नार (पेन्न) नदी के द० क०। इस नदी का शुद्ध नाम पिनाकिनी है। —७— कड़प, नेल्लूरु के प०। स० मु० कड़प (कृपा) उसी नामकी नदी के कनारे है। —८—बल्लारी कड़प के प० बा० को झुकता। स० मु० बल्लारी (बलहरी) हुगरा नदीके बा० क० से ४मील। वहां से २६ मील बा० तुंगभद्रा के द० क० बिजयनगर का प्रसिद्ध पुराना शहर उजड़ा हुआ पड़ा है।—९–चित्तूर, कड़पके द०। स० मु० चित्तूर (चेतूर)।–१०–अर्काडु (अर्काट) कड़प के द० स० मु० अर्काट, जिसे पण्डित लोग अरुकटि भी कहते हैं, पालार नदी के द० क० सबे कर्नाटक की पुरानी राजधानी थी। अर्काडु से ८५ मील द० अ० को झुकता कडालूर का बंदर है।–११–चेंगलपट्टू, नेल्लूरु के द०। स० मु०चेंगलपट्टू (सिंहलपेटा)। इसी ज़िले में मंदराज जिसका असल नाम

मंदिराज है, और जिसे चीनापट्टन भी कहते हैं, उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ८५० मील और सड़कको राह १०६३ मील १३° ५` उ० अ० और ८०° २१` पू० द० में ठीक समुद्र के तट पर बसा है, क़िला सेंट जार्ज का उसमें बहुत मज़बूत बना है। मंदराज से ३८ मील नै०को कुंजबरम् (कांचीपुर) का शहर है। महादेव का बहुत बड़ा मंदिर बना है। कोस एक पर विष्णुकुंजी (विष्णुकांची) में वरदराज विष्णु का मंदिर है।—१२—शेलम अर्काडु के नै०। पहाड़ उस में ५000 फ़ुट तक ऊंचे हैं। स० मु० शेलम।—१३—तिरुच्चिना-पल्ली, शेलम के द० अ० को झुकता। स० मु० तिरुच्चिनापल्ली कावेरी के द० क०। शहर के सामने कावेरी के एक सुन्दर टापू में श्रीरंगजी का बड़ाभारी मंदिर बनाहै।—१४—तंजाउरू (तंजोर) (तंजावर) (तंजनगर), जिसे संस्कृत में चोलदेश लिखा है, तिरुच्चिनापल्ली के पू०। बर्दवान के बाद ऐसा उपजाऊ दूसरा ज़िला नहीं है। स० मु० तंजोर कावेरी के द० क०।—१५—कोम्बुकोनम् (कुंभाकोनम्) तंजाउरूके पू० कावेरी के मुहानों में। स० मु० नागोर (नगर) समुद्र के तट पर। चोलबंशी राजाओं की पुरानी राजधानी कोम्बुकोनम् (कुंभघोन। वहां से ३५ मील प० बा० को झुकता कावेरी के टापू में है)—१६—मथुरा (मीनाक्षी), जिसे अंगरेज़ मदुरा कहते हैं, तंजोर के नै०। स० मु० मथुरा व्यागारू नदी के द० क० वहां से कुमारी अंतरीप १६० मील रह जाता है। मथुरा से अनुमान ८५ मील अ० को रामेश्वर के टापू में, जहां व्यागारू समुद्र से मिली है उससे थोड़ी ही दूर, पूर्व तट से मील एकके तफ़ावत पर सेतबंध रामेश्वर का प्रसिद्ध मंदिरहै।—१७—तिरुनेल्लुवलि

मथुरा के द० नै० को झुकता । स० मु० तिरुनेल्लूवलि से पू० समुद्र के तट तूतीकोरिन में गोतेखोर सीप से मोती निकालते हैं । —१८—कोयम्मुत्तूर, मथुरा के बा० । स०मु० कोयम्मुत्तूर से ४० मील बा० नीलगिर के पहाड़ पर उतकमंद समुद्र से कुछ ऊपर ७००० फुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है । ऊपर लिखे हुये सातोंज़िले अर्थात् शेलम से कोयम्मुत्तूर तक, द्रविड देश में गिने जाते हैं ।—१९—मलीबार (मलय) (तिरियाराज) (केरल) कोयम्मुत्तूरके प० घाट उतर कर समुद्र तक, पार केरल देशउ० में चन्द्रगिर नदी तक गिना जाता है, इस हिसाब से अगले दो ज़िले भी इसी में समझने चाहियें । स० मु० कोच्ची समुद्र के तट परहै । —२०—कल्लीकोट, मलयबारकेउ० । स० मु० कल्लीकोट समुद्र के तट पर है ।—२१—तेल्लिचेरी,कल्लीकोट के उ० । स० मु० तेल्लिचेरी (तालचेरी) समुद्र के तट पर है ।—२२—मंगलूर(कानडा) (तुलव) तेल्लिचेरी के उ० । स० मु० मंगलूर (कोडियालबंदर) समुद्र के तट पर है ।—२३—होनोर, मंगलूर के उ० गोवे तक, जो पुर्टगालवालों के दख़ल में है,यह ज़िला भी तुलव देश में गिना जाता है ॥

अब बम्बई हाते के ज़िले लिखे जाते हैं ।—१—धारवार गोवे के पू०,स० मु० धारवार (नसीराबाद) । —२—बेलगांव धारवार के बा० । स० मु० बेलगांव । —३—कोकण (कोंकण) बेलगांव के बा० । स० मु० रत्नागिर समुद्र के कनारे है। —४—ठाणा, कोकण के उ० । स० मु० ठाणा साष्टी के टापू में जिसे वहांवाले झालता और शास्त्र और अंगरेज़ लोग सालसिट कहते हैं समुद्र के तट पर है । —५—बम्बई का टापू

साष्टी टापू के द० । पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इनके बीच में ४०० हाथ समुद्र की खाड़ी थी द० तरफ़ बंबई का टापू ८ मील लम्बा और २ मील चौड़ा था, और उ० तरफ़ साष्टी का टापू १८ मील लम्बा १३ मील चौड़ा था पर अब उन दोनों के बीच बंध बँधजाने से एक होगये। क़िला बंबई का मज़बूत है, समुद्र तीन तरफ़ उसकी खाई होगया है। बम्बई १६° १८' उ० अ० और ७२° ५०' पू० दे० में उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ६५० मील प० ज़रा नै० झुकता और सड़क की राह ११८५ मील पड़ता है। —६—पूना ठाणा के पू० । स० मु० पूना समुद्र से २००० फुट ऊंचा मती नदीके द० क० है। पूना के द० नै० को झुकता अनुमान ५० मील और समुद्र के तट से २५ मील प० घाट में महाबलेश्वर का पहाड़ समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। कृष्णा नदी उसी जगह से निकली है, इस कारण हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। —७— सितारा, पूना के द०, स० मु० सितारा। वहां से १००मील पू०अ०को झुकता भीमा नदी के द० क० पंढरपुर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। सितारेसे १४० मील अ० बीजापुर। (विजयपुर) किसी समय में दक्खनके बादशाहों की राजधानी था और फिर दिल्ली के तहत में एक सूबा रहा।—८—शोलापुर सितारा के पू०, स० मु० शोलापुर। —९—अहमदनगर, पूना के ई० स० मु० अहमदनगर, बादशाही वक़्त में उसी नाम के सूबे की राजधानी थर। —१०— नासिक अहमदनगर के वा० स० मु० नासिक गोदावरी के वा० क०। २०मील नै० पहाड़ पर त्रिम्बक का क़िला है। इसी पहाड़ से गोदावरी निकली है।—११—ख़ानदेश नासिक के उ०

और सातपुड़ पहाड़ के द० । बादशाही वक्त में अपने आस पास ज़िलों को लेकर यह भी एक सूबा था, स० मु० धूलिया पींजरा नदी पर। १०० मील पू० पहाड़ पर आसेरगढ़ का मज़बूत क़िला है।—१२—सूरत, खानदेश के प०। स० मु० सूरत तापी के बा० क०, किसी समय में सूबे खानदेश की राजधानी था। यहां तक अर्थात् नर्मदा के द०, जो ज़िले बम्बई हाते के ताबे हैं शास्त्र में प्राय: इन सब को महाराष्ट्र देश कहा है। —१३—भड़ोंच, सूरत के उ० स० मु० भड़ोंच जिसका असली नाम भृगुगेश बतलाते हैं, समुद्र से २५ मील नर्मदा के द० क०। —१४—खेड़ा भड़ोंच के उ०, गायकवाड़ की अमल्दारी से बहुत बेडौल मिल जुल रहा है, स० मु० खेड़ा दो छोटी छोटी नदियों के संगम पर है।—१५—अहमदाबाद, खेड़े के उ०, शास्त्र में सोराष्ट्र जिसे अब लोग सोरट*कहते हैं• इसी देश को लिखा है। स० मु० अहमदाबाद सांभरमती के बा० क० किसी ज़मानेमें यह शहर इसी नाम के सूबे की बहुत आबाद राजधानी था। —१६—सिंध समुद्र से सिंधु नदी के दोनों कनारे बहावल-पुर की अमल्दारी तक चला गया है, मुंज अंतरीप इस इलाक़े की समुद्र के तट में प० सीमा है। इसको ज़िला न कहकर एक कमिश्नरी कहना चाहिये; क्योंकि उसके लिये एक कमिश्नर मुक़र्रर है और कमिश्नर के नीचे तीन असिस्टंट बतौर कल-क्टर मजिस्ट्रेट के तीन ज़िलों में अर्थात् हैदराबाद करांची और शिकारपुर में काम करते हैं। इस इलाक़ेमें उजाड़ और रेगिस्तान बहुत है, परंतु सिंधु नदी के तटस्थ धरती उपजाऊहै। स०मु० अर्थात् कमिश्नर के रहने की जगह हैदराबाद सिंधु की उस

* कौन जाने सोरट से मुसल्मानों ने सूरत बना लियाहो॥

धारा के, जिसका नाम फुलाली है, द० क० पर बसा है। सिंधु की बड़ी धारा वहां से तीन मील प० है। हैदराबाद से अनुमान ४० मील द० ज़रा नै० को झुकता सिंधु के द० क० ठट्ठे का पुराना शहर है। किसी समय में बहुत आबाद था अब उसके बदल ५० मील प० हटकर करांची बन्दर ने रौनक़ पाई है। हैदराबाद से ११० मील द० शिकारपुर बड़े व्योपार की जगह है। हैदराबाद से २०० मील उ० ई० को झुकता सिंधुके एक टापूमें छोटीसी पहाड़ी पर भक्कर (वक्कर) का क़िला है, और क़िले के दोनों तरफ़, अर्थात् सिंधु के दोनों कनारों पर, रोड़ी और सक्कर दो शहर बस्ते हैं॥

निदान जितने मुल्क में सर्कार अंगरेज़ बहादुर की अमलदारी है, अर्थात् जिसका पैसा सर्कारी ख़ज़ाने में आता है और जहां दीवानी फ़ौजदारी की कचहरियां सर्कार की तरफ़ से बैठी हैं, उतने का वर्णन हो चुका, अब जो शेष रहा वह हिन्दुस्तानियों के क़ब्ज़े में है। हम पहले उत्तराखण्ड फिर मध्य देश और तब उसके पीछे दक्षिण के रजवाड़ों का वर्णन करेंगे, यदि इनके सिवाय कोई और भी राजा महाराज नव्वाब इत्यादि सुन्ने में आवे, तो जानना कि वह वस्तुतः केवल ज़मीदार अथवा मुआफ़ीदार है, अर्थात् या तो सर्कार अथवा किसी और राजा को कर देता है, या उनकी दी हुई मुआफ़ी खाता है, दीवानी फ़ौजदारीका इख़्तियार नहींरखता। पस उनके इलाक़ों का ज़िक्र इन्हीं ऊपर लिखे हुए ज़िलों में आगया या नीचे लिखे हुए रजवाड़ों में आजावेगा॥

निदान उत्तराखण्ड में।—१—नयपाल, इसे प० में काल नदी जो मानसरोवर के द० हिमालयसे निकल सरयू में गिरती

है कमाऊं के सर्कारी इलाके से और पू० में कंकई नदी जो हिमालय से निकल दूसरी नदियों से मिलती मिलाती गंगा में जा गिरती है, शिकम के राज से जुदा करती है। उ० में हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है, और द०में पहाड़ों से नीचे कुछ दूर तो अवध का इलाक़ा और फिर सूबे बिहार और बंगाले के सर्कारी ज़िले हैं। बिस्तार ५४५ मील मुरब्बा। आमदनी ३२००००० रुपया साल। राजधानी क़ाठमांडू, जिस का शुद्ध नाम काष्ठमंदिर है, २०° ४२` उ० अ० और ७५°पू० दे० में विशनमती नदी के पू० क०, जहां वह बागमतीसे मिली है बंगाले के मैदान से प्राय: ४८०० फ़ुट ऊंचा बसाहै। धैवन का बर्फ़ी पहाड़ जो वहां से दिखलाई देता है, समुद्र से कुछ ऊपर २८६०० फ़ुट ऊंचा है, और चंद्रगिरि, जो काठमांडू के पास है, कुछ कम ८५०० फ़ुट ऊंचा होवेगा। काठमांडूसे ४१ मी० प० बा० को झुकती पहाड़ पर एक बस्ती गोरखा नाम नयपाल के वर्तमान राजाओं की क़दीम जन्मभूमि है, और इसी कारण बहुधा नयपालियों को गोरखिये और गोरखाली भी कहते हैं। गोरखनाथ का वहां मंदिर है। हिमालय के पहाड़ों में गंडक नदी के बा० तट से अति निकट मुक्तिनाथ हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। —२—कश्मीर और जम्मू, रावी और सिंधु नदी के बीच प्राय: सारा कोहिस्तान इसी इलाक़ेमें गिनना चाहिये, बरन हिमालय पार लद्दाख़ का मुल्क भी जो हिन्दुस्तान की हद्द से बाहर है, अब इसी राज के शामिल है। बिस्तार २५००० मील मुरब्बा। हद्द उ० और पू० चीनकी अमल्दारी; प० अफ़ग़ानिस्तान, और द० पंजाब के सर्कारी ज़िले और चंबा और बिसहर के छोटे छोटे रजवाड़ों से मिली

है। आमदनी अनुमान १०००००००० रुपया साल। कश्मीर की दून, पीथो और किताबों में बहुत प्रसिद्ध है। उसकी जहां तक तारीफ़ कीजिये सब थोड़ी है। वहां बरसात नहीं होती जाड़े के सिवाय सदा बहार बनी रहती है, जाड़ों में बर्फ़ पड़ती है। श्रीनगर कश्मीर की राजधानी ३३-°२३` उ० अ० और ७४-°४०` पू० दे० में समुद्र से ५५०० फ़ुट ऊंचा वितस्ता (झेलम) के दोनों कनारों पर डलझील के बग़ल में बहुत ख़ूबी के साथ बसा है। वहां से १०० मील द०, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है, एक छोटी सी पहाड़ी पर जम्बू बसा है। श्रीनगर से ८ मंजिल उ० बर्फ़ के पहाड़ों में अमरनाथ महादेव के दर्शन हैं। —३— शिकम, प० कंकई नदी नयपाल से और पू० तिष्टा नदी भुटान से जुदा करती है, द० को कुछ दूर तक नयपाल और कुछ दूर तक सर्कारी इलाक़ा है, और उ० हिमालय पार चीन की अमल्दारी है। विस्तार १६०० मील मुरब्बा। राजधानी शिकम, जिसे दमूजंग भी कहते हैं, २०-°१६` उ० अ० और ८८°३ पू० दे० में झमोक्रमा नदी के कनारे बसा है। दार्जलिंग का पहाड़ समुद्र से ७००० फ़ुट ऊंचा सर्कार ने साहिब लोगोंके हवाख़ाने के वास्ते राजा से लेलिया है।—४—भुटान (भोट); यद्यपि हम लोग हिमालय की पर्वतस्थली में लंहासे से लेकर लद्दाख़ पर्यन्त तिब्बत के सारे मुल्क को भुटान अथवा भोट कहते हैं, परंतु अंगरेज़ बहुधा इसी इलाक़े को भोट केनाम से लिखते हैं जिसका यहां वर्णन होता है। यह इलाक़ा सिक्कम के पू० हिन्दुस्तान के ई० में हिमालय के दर्मियान २०० मीलसे अधिक लंबा और प्राय: १०० मील चौड़ा चीन के ताबे है। राजा वहां का धर्मराजा साक्षात् बुद्ध का अवतार कहाता है, और जो

आदमी उसके नीचे मुल्क का कारोबार करता है उसे देवराजा पुकारते हैं । राजधानी तमीमूदन २०° ५` उ० अ० और ८६° ४०° पू० दे० में पहाड़ों के बीच बसा है ।—५—चम्बा सुकेत और मंडो, ये तीनों पहाड़ी राज कश्मीर के अ० चनाब और सतलज के बीच में हैं । चम्बे का इलाक़ा रावी के दोनों तरफ़ कश्मीर की अमल्दारी से कांगड़े के सर्कारी ज़िले तक चला गया है । आमदनी १०००००रुपये सालसे कम है । राजधानी चम्बा ३२° १०` उ० अ० और ७६° ५` पू० दे० में रावीके द० क० है । सुकेत सतलज से १२ मील द० क० ३१° २० उ० अ० और ७६° ५८` पू० दे० में बसाहै आमदनी अनुमान ८०००० रुपयासाल । और मंडी ३५०००० रु० साल की आमदनी का मुल्क सुकेत और सर्कारी ज़िले कांगड़े के बीच में पड़ाहै । राजधानी मंडी ३१° ४०` उ० अ० और ७६° ५३` पू० दे० में व्यासा नदीके बा० क० है । वहां से १० मील मैदान की तरफ़ रैवालसर हिन्दुओं का तीर्थ है ।—६—सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाक़े । इनमें कहलूर, सिरमौर और बिसहर, ये तीन तो अनुमान लाख लाख रु० साल की आमदनी के रजवाड़े हैं*और बाक़ी बारह ठाकुराइयों के राना तीस हज़ार से लेकर तीनसौ रु० साल तक की आमदनी रखतेहैं । कहलूर की राजधानी बिलासपुर ३१° १९` उ० अ० और ७६° ४५` पू० दे० में समुद्र से १५०० फुट बलंद सतलज के बा०क० परहै । सिरमौर की राजधानी नाहन ३०° ३०` उ०अ० और ७७°४५

---

* चौथा रजवाड़ा हंडूर जिसकी राजधानी नालागढ़है और सर्कार ने ज़ब्त करके शिमला के ज़िलेमें शामिल करलिया था अब फिर छोड़दिया मलौन का मशहूर क़िला इसी राजमेंहै ॥

पू० दे० में समुद्र से ३०००फुट बलंद जमना से २०मील बा० क०है। बिसहर का इलाक़ा सतलज के बा० क० हिमालय पार चीन की हद्द से जामिला है। राजधानी उसकी रामपुर ३१° २७' उ० अ० और ७७° ३८' पू० दे० में समुद्र से ३३०० फुट ऊंचा सतलज के बा० क० बसा है। कनावर का परगना जहां साहिब लोग हवा ख़ाने जाते हैं, और बरसात नहीं होती, इसी इलाक़े में है।—१०—गढ़वाल बिसहर की हद्द से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मील मु० के बिस्तार में अनुमान१०००० रुपया साल की आमदनी का मुल्कहै। राजा टीहरी में रहताहै, वह ३०°२३ उ० अ० और ७८° •२८ पू० दे० में समुद्र से २२०० फुट बलंद गंगा के बा० क० है॥

मध्यदेश के रजवाड़ों में।—१—बघेलखंड इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर के द० सोनके दोनों तरफ़ बिन्ध्य की पर्वत स्थली में बसा है। तीन तरफ़ सर्कारी अमल्दारी से घिराहुआ प० बुंदेलखंडका इलाक़ा है। बिस्तार १०००० मील मु० । आमदनी २००००००रु० साल। राजधानी रीवां (रेवा) बिछिया नदी के द० क० २४° ३४' उ० अ० और ८१° १९ पू० दे० में है।—२— बुंदेलखंड पू० बघेलखंड है और प० ग्वालियर और उ० और द० सूबे इलाहाबाद के सर्कारी ज़िले। इस इलाक़ेमें दतिया, उरछा, चारखाड़ी, छतरपुर, अजयगढ़, पन्ना, समथर, और बिजावर ये ८ तो ६००० मील मु० के बिस्तारमें रजवाड़े हैं, और बाक़ी २४ के क़रीब बहुत छोटे छोटे जागीरदार हैं, २५°४३ उ० अ० और ७८° २५' पू० दे० में दतियाहै आमदनी १०००००० । दतियासे ७५ मील द०अ० को झुकती टीहरी उरछाकी राजधानीहै, आमदनी ७००००० राजाके टीहरीमें आरहने से पुरानी राजधानी उरछा